कामख्या साधना विधि

शक्ति के उपासकों के लिए 'कामाख्या मन्त्र' की साधना अत्यन्त

आवश्यक है। यह कामाख्या मन्त्र कल्प वृक्ष के समान है। सभी साधकों को एक दो या चार बार इसका साधना एक वर्ष में अवश्य करना चाहिए इस मन्त्र की साधना में चादि-शोधन या कलादि शोधन की आवश्यकता नहीं है। इसकी साधना से सभी विघ्न दूर होते हैं और शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होती है। इस पोस्ट के माध्यम से हम सरलतम साधना विधि बता रहे है आशा है आप लोग इसका उपयोग कर प्रारब्ध भोग काटकर उन्नति के मार्ग में सफल होंगे। इस साधना में शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि की अति आवश्यकता होती है।

इसलिये प्रातः काल अथवा रात्रि काल में स्नान आदि से निवृत होकर पश्चिम अथवा उत्तर दिशा में मुख्य कर लाल ऊनि आसन बिछाकर बैठे साधनों पर बैठने से पहले यह सुनिश्चित कर ले बीच में किसी भी प्रकार का कार्य शेष ना हो इसके लिय सभी आवश्यक कार्य पहले ही पूर्ण कर ले हो सके तो साधना स्थल (कमरे को अंदर से बंद कर के रखो आसान पर स्थान ग्रहण करने के बाद शरीर एवं आसन पवित्रीकरण के बाद अपने सामने एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछा कर उसपर किसी भी देवी की प्रतिमा अथवा चित्र के प्रतीकात्मक रूप में रखे चित्र ना भी हो तब केवल घी के दीपक से ही काम चल सकता है। दीपक जलाने के बाद नीचे दिए गए मंत्र क्रिया अनुसार साधना आरम्भ करें।

॥ विनियोग ।।

ॐ अस्य कामाख्या - मन्त्रस्य श्री अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री कामाख्या देवता, सर्व सिद्धि प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः ।

॥ ऋष्यादि-न्यास ।।

श्री अक्षोभ्य ऋषये नम: शिरसि,
अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे,
श्री कामाख्या देवतायै नमः हृदि,
सर्व सिद्धि प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

॥ कर-न्यास ॥

त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः,

त्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा,
त्रूं मध्यमाभ्यां वषट्,
त्रैं अनामिकाभ्यां हुम्,
त्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्,
त्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

।। अङ्ग-न्यास ॥

त्रां हृदयाय नमः,
त्रीं शिरसे स्वाहा,
त्रूं शिखायै वषट्,
त्रैं कवचाय हुम्,
त्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्,
त्र: अस्त्राय फट् ।

कामाख्या देवी का ध्यान

कामाख्या देवी ध्यान

उक्त प्रकार न्यासादि करने के बाद भगवती कामाख्या का निम्न प्रकार से ध्यान करना चाहिए।

भगवती कामाख्या लाल वस्त्रधारिणी, द्वि-भुजा, सिन्दूर तिलक लगाए हैं। भगवती कामाख्या निर्मलचन्द्र के समान उज्ज्वल एवं कमल के समान सुन्दर मुखवाली है। भगवती कामाख्या स्वर्णादि के बने मणि- माणिक्य से जटित आभूषणों से शोभित है। भगवती कामाख्या विविध रत्नों से शोभित सिंहासन पर बैठी हुई हैं। भगवती कामाख्या मन्द मन्द मुस्करा रही है। भगवती कामाख्याः उन्नतः वाली है। कृष्णवर्णा भगवती कामाख्या के बड़े-बड़े नेत्र हैं भगवती कामाख्या विद्याओं द्वारा घिरी हुई है। डाकिनी- योगिनी द्वारा शोभायमान हैं। सुन्दर स्त्रियों से विभूषित हैं।विविध सुगन्ध से सुवासित है। हाथों में ताम्बूल लिए नायिकाओं द्वारा सुशोभिता है। भगवती कामाख्या समस्त सिंह-समूहों द्वारा वन्दिता है। भगवती कामाख्या त्रिनेत्रा है। भगवती के अमृतमय बचनों को सुनने के लिए उत्सुका सरस्वती और से युक्ता देवी कामाख्या समस्त गुणों से सम्पन्ना अन्तीम दया-मंत्री एवं मङ्गल रूपपणी है। उक्त प्रकार से ध्यान कर कामाख्या देवी की पूजा कर कामाख्या मन्त्र का 'जय'

करना चाहिए जप के बाद निम्न प्रकार से 'प्रार्थना' करनी चाहिए।

प्रार्थना

कामाख्ये काम सम्पत्रे, कामेश्वरि हर-प्रिये!
कामनां देहि मे नित्यं, कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
कामदे काम-रूपस्थे, सुभगे सुर-सेविते!
करोमि दर्शन देव्या: सर्वकामार्थ सिद्धये ।।

अर्थात् हे कामाख्या देवि कामना पूर्ण करनेवाली कामना की अधिष्ठात्री शिव की प्रिये मुझे सदा शुभ कामनाएं दी और मेरी कामनाओं को सिद्ध करो हे कामना देनेवाली, कामना के रूप में ही स्थित रहनेवाली, सुन्दरी और देवगणों से सेविता देवि! सभी कामनाओं की सिद्धि के लिए मैं आपके दर्शन

करता हूँ।

मंत्र ॥ श्रीं श्रीं श्रीं हूँ हूँ स्त्रीं स्त्री कामाख्ये प्रसीद स्त्री स्वी हूँ हूँ श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र महापापों को नष्ट करनेवाला, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष देनेवाला है। इसके 'जय' से साधक साक्षात् देवी स्वरूप बन जाता है। इस मन्त्र का स्मरण करते ही सभी विघ्न नष्ट हो जाते

है।

॥ मां कामाख्या देवी कवच ।।

महादेव उवाच

शृणुष्व परमं गुह महाभयनिवर्तकम् कामाख्यायाः

सुरश्रेष्ठ कवचं सर्व मंगलम् । यस्य स्मरणमात्रेण योगिनी

डाकिनीगणाः । राक्षस्यो विघ्नकारिण्यो पाश्चान्या

विघ्नकारिका: क्षुत्पिपासा तथा निद्रा तथान्ये ये च

विघ्नदाः । दूरादपि पलायन्ते कवचस्य प्रसादतः। निर्भयो

जायते मत्र्यस्तेजस्वी भैरवोपमः समासक्तमनाश्चापि

जपहोमादिकर्मसु । भवेच्च मन्त्रतन्त्राणां निर्वघ्नेन

सुसिद्धये ।

जी बोले- सुरश्रेष्ठ!

अर्थ भगवती कामाख्या का परम गोपनीय महाभय को दूर

करने वाला तथा सर्वमंगलदायक वह कदच सुनिये, जिसकी

कृपा तथा मात्र से सभी योगिनी, डाकिनीगण,

विघ्नकारी राक्षसियों तथा साधा उत्पन्न करने वाले अन्य

उपद्रव, भूख प्यास, निदा तथा उत्पन्न विनायक दूर से ही

कर हैं। इस कवच के प्रभाव से मनुष्य भय

रहित, तेजस्वी तथा भैरवतुल्य हो जाता है जप, होम आदि

कर्मों में समासक्त मन वाले भक्त की मंत्र-तंत्र में सिद्धि

निर्विघ्न हो जाती है।।

कवच पाठ आरम्भ

ॐ प्राच्यां रक्षतु मे तारा कामरूपनिवासिनी।

आग्नेय्यां पातु याम्यां धूमावती स्वयम्।।

नैर्ऋत्यां भैरवी पातु वारुण्यां भुवनेश्वरी वायव्यां सततं

पातु छिन्नमस्ता महेश्वरी ।।

कोर्या पातु मे देवी श्रीविद्या बगलामुखी ऐशान्यां पातु मे

नित्यं महात्रिपुरसुन्दरी ।

उध्वरक्षतु मे विद्या मातंगी पीठवासिनी । सर्वतः पातु मे

नित्यं कामाख्या कलिकास्वयम् ।।

ब्रह्मरूपा महाविद्या सर्वविद्यामयी स्वयम् । शीर्षे रक्षतु में

दुर्गा भाल श्री भवगेहिनी ।।

त्रिपुरा युगे पातु शर्वाणी पातु नासिकाम। चक्षुषी

पण्डिका पातु श्रोत्रे नीलसरस्वती ॥

मुखं सौम्यमुखी पातु ग्रीवां रक्षतु पार्वती जिल्हां रक्षतु मे

देवी जिल्हाभीषणा ।।

वाग्देवी वदनं पातु वक्षः पातु महेश्वरी बाहू महाभुजा पातु

कराङ्गुलीः सुरेश्वरी।

पृष्ठतः पातु भीमाच्या कटयां देवी दिगम्बरी उदरं पातु में

नित्यं महाविद्या महोदरी ।।

उग्रतारा महादेवी जो परिरक्षतु । गुदं मुष्कं च मेदं च

नाच सुरसुंदरी।।

पादाङ्गुलीः सदा पातु भवानी त्रिदशेश्वरी

रक्तमासास्थिमज्जादीनपातु देवी शवासना।।

महाभयेषु परेषु महाभयनिवारिणी । पातु देवी महामाया

कामाख्यापीठवासिनी ।।

भस्माचलगता दिव्यसिंहासनकृताश्रयाः पातु श्री

कालिकादेवी सर्वोत्पातेषु सर्वदा ।।

रक्षाहीन तु यत्स्थान कवचेनापि वर्जितम्।तत्सर्वं सर्वदा

पातु सर्वरक्षण कारिणी।।

इदं तु परमं गुहां कवचं मुनिसत्तम। कामाख्या भयोक्तं ते

परम्॥

अनेन कृत्वा रक्षां तु निर्भयः साधको भवेतान तं

स्पृशेदभयं घोरं मन्त्रसिद्धि विरोधकम् ।।

जायते च मनः सिद्धिर्निर्विघ्न महामते । इदं यो

धारयेत्कण्ठे वा कवचं महत् ॥

अव्याहताज्ञः स भवेत्सर्वविद्याविशारदः । सर्वत्र लभते

सौख्यं मंगलं तु दिनेदिने ।।

यः पठेतायतो भूत्वा कवचं चेदमद्भुतम् । देव्याः पदवीं

याति सत्यं सत्यं न संशयः ॥

मां कामाख्या देवी कवच हिन्दी अर्थ

कामरूप में निवास करने वाली भगवती तारा पूर्व दिशा में,

पोडशी देवी अग्निकोण में तथा स्वयं धूमावती दक्षिण दिशा में रक्षा करें। नैत्रऋत्यकोण में भैरवी पश्चिम दिशा में भुवनेश्वरी और वायव्यकोण में भगवती महेश्वरी निमस्ता निरंतर मेरी रक्षा करें। उत्तरदिशा में विद्यादेवी बगलामुखी तथा ईशानकोण में महात्रिपुर सुंदरी सदा मेरी रक्षा करें। भगवती भगवती कामाख्या के शक्तिपीठ में निवास करने वाली मातंगी विद्या ऊभाग में और भगवती कालिका कामाख्या स्वयं सर्वत्र मेरी नित्य रक्षा करें। ब्रह्मरूपा महाविद्या सर्व विद्यामयी स्वयं दुर्गा सिर की रक्षा करें और भगवती श्री भवगेहिनी मेरे ललाट की रक्षा करें त्रिपुरा दोनों भौहों की, वणी नासिका की देवी वंधिका आँखों की तथा नीलसरस्वती दोनों कानों की रक्षा करें। भगवती सोम्यमुखी मुख की देवी पार्वती ग्रीवा की और जिल्हा ललन भीषणा देवी मेरी जिल्हा की रक्षा करें।। वाग्देवी चंदन की, भगवती महेश्वरी वक्ष स्थल की, महाभुजा दोनों बाहु की तथा सुरेख हाथ की अंगुलियों की रक्षा करें।। भीमास्या पृष्ठ भाग की भगवती दिगम्बरी कटि प्रदेश की और महाविद्या महोदरी सर्वदा मेरे उदर की रक्षा करें। महादेवी उग्रतारा गया और ऊरुओं की एवं सुरसुन्दरी गुदा, अण्डकोश,

लिंग तथा नाभि की रक्षा करें। भवानी त्रिदशेरी सदा पैर

की अंगुलियों की रक्षा करें और देवी शवासना रक्त, मांस,

अस्थि मज्जा आदि की रक्षा करें। भगवती कामाख्या

शक्तिपीठ में निवास करने वाली महाभय का निवारण करने

वाली देवी महामाया भयंकर महाभय से रक्षा करें। भस्माचल

पर स्थित दिव्य सिंहासन विराजमान रहने वाली श्री कालिका

देवी सदा सभी प्रकार के दिनों से रक्षा करें। जो स्थान कवच

में नहीं कहा गया है, अतएव रक्षा से रहित है उन सबकी रक्षा

सर्वदा भगवती सर्वरक्षकारिणी करे। मुनिश्रेष्ठ! मेरे द्वारा आप

से महामावा सभी प्रकार की रक्षा करने वाला भगवती

कामाख्या को जो यह उत्तम कवच है वह अत्यन्त गोपनीय एवं

श्रेष्ठ है। इससे रहित होकर साधक निर्भय हो जाता

है। मन्त्र सिद्धि का विरोध करने वाले भयंकर भग उसका कभी

स्पर्श तक नहीं करते हैं। महामते। जो व्यक्ति इस महान

कवच को कंठ में अथवा बाहु में धारण करता है उसे निर्विघ्न

मनोवांछित फल मिलता है। वह मोजावाला होकर

सभी विद्याओं में प्रवीण हो जाता है तथा सभी जगह दिनोंदिन

मंगल और सुख प्राप्त करता है। जो जितेन्द्रिय व्यक्ति इस

अद्भुत का पाठ करता है वह भगवती के दिव्य धाम को

जाता है। यह सत्य है, इसमें संशय नहीं है।

नोट - कामख्या तंत्र शास्त्र की आराध्या है इनका सकाम

अनुष्ठान करने से पहले गुरुआज्ञा अतिआवश्यक है।